Dua E Qunoot

اَللّٰهُمَّ اِنا نَسْتَعِينُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِيْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ تَّفْجُرُكَ
اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّيْ وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعَاىٰ وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْ رَحْمَتَكَ وَنَخْشَاىٰ عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحَقٌ-

"ऐ अल्लाह, हम आप से मदद चाहते हैं ! और आप से माफी मांगते हैं आप पर ही ईमान रखते हैं और आप पर ही भरोसा करते हैं, और आपकी बहुत अच्छी तारीफ करते हैं और आपका शुक्र अदा करते हैं और आपकी ना सुकरी नहीं करते, और अलग करते हैं और छोड़ते हैं, उस शख्स को जो तेरी नाफरमानी करें। ऐ अल्लाह, हम आपकी ही इबादत करते हैं और आपके लिए ही नमाज़ पढ़ते हैं और सजदा करते हैं और आपकी तरफ दौड़ते और झपटते हैं और आपकी रहमत के हकदार हैं और आपके आजाब़ से डरते हैं, और बेशक आपका आजाब़ काफिरों को पहुंचने वाला है।"

(Abu Dawud (1425), al-Tirmidhi (464))

islamicduas.net